भगवानोवाच्य– यह तो बच्चों को समझाया गया है कि मनुष्य को वा किसी देवता को भगवान नहीं कहा जाता। यहां जब बैठे हो तो बुद्धि में यह रखना है कि हम संगमयुगी ब्राह्मण है। यह भी याद कोई सदैव कोई की रहती नहीं है। अपने को सचमुच ब्राह्मण समझते हैं ऐसा भी नहीं है। ब्राह्मण बच्चों को फिर दैवी गुण भी धारण करने हैं। हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। हम शिवबाबा द्वारा पुरुषोत्तम बन रहे हैं। यह यादगिरी भी सबको नहीं रहती है। बार2 यह भूल जाते हैं कि हम पुरुषोत्तम युगी ब्राह्मण हैं। अभी ब्राह्मण तुम बन रहे हो। हमेशा नम्बरवार तो होते ही हैं। सब अपनी2 बुद्धि अनुसार पुरुषार्थ करते हैं। अभी संगमयुगी हो। पुरुषोत्तम बनने वाले हो। जानते हो हम पुरुषोत्तम तब बनेंगे जब अपने अब्बा को यानी मोस्ट बिलवेड बाप को याद करेंगे। याद से ही पाप विनाश होंगे। अगर कोई पाप करते हैं तो उसका सीधा हिसाब चढ़ जाता है। आगे जो पाप करते थे उनका 10प्रतिशत चढ़ता है। अब तो 100प्रतिशत चढ़ता है ;क्योंकि ईश्वरीय गोद में आकर फिर पाप करते हैं। तुम जानते हो बाप हमको पढ़ाते हैं सो देवता बनने। यह याद जिसको रहती है वो अलौकिक सर्विस भी करते रहेंगे। सदैव हर्षितमुखी बनने लिए औरों को भी रास्ता बताना है। भल कहीं भी जाते हो बुद्धि में यह तो याद रहे कि हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। यह है पुरुषोत्तम युग। वो पुरुषोत्तम मास वा वर्ष कहते हैं। तुम कहते हो हम हैं पुरुषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण। यह अच्छी रीति बुद्धि में धारण करना है। हम पुरुषोत्तम युगी ब्राह्मण बनने वाले हैं। अभी हम पुरुषोत्तम बनने की यात्रा पर हैं। यह भी याद रहे तो भी मनमनाभव ही हो गया। तुम बच्चे जानते हो हम पुरुषोत्तम बनने की यात्रा पर हैं। यह भी याद रहे तो भी मनमनाभव ही हो गया। तुम बच्चे जानते हो हम पुरुषोत्तम बन रहे हैं। पुरुषार्थ के अनुसार और अपने कर्मों अनुसार। दैवी गुण भी चाहिए और श्रीमत पर भी चलना पड़े। अपनी मत पर तो सभी मनुष्य चलते हैं। वो है ही रावण मत। ऐसे भी नहीं कि तुम कोई श्रीमत पर ही चलते हो। बहुत ही हैं जो रावण की मत पर भी चलते हैं। श्रीमत पर कोई कितना % चलते हैं ,कोई कितना % चलते हैं। कोई तो 2% भी चलते होंगे। भल यहां भी बैठे हो तो भी याद में तो पूरा नहीं बैठते हो। कहीं ना कहीं बुद्धियोग भटकता होगा। यहां एक ही अनोखा बच्चा है जो कि चार्ट लिखता है। इनको अपनी उन्नति का खयाल है। रोज लिखता है कि आज कोई पाप काम तो नहीं किया है। किसको दुःख तो नहीं दिया है। अपने उपर बहुत सम्भाल करनी होती है ;क्योंकि धर्मराज भी सामने खड़ा है ना। अभी ही समय है हिसाब–किताब चुक्तू करने का। सजायें भी खानी पड़ें। बच्चे जानते हैं हम जन्म जन्मांतर के पापी हैं। कहां भी कोई मंदिर में अथवा कोई भी गुरू पास अथवा कोई भी ईष्ट देवता पास जाते हैं तो कहते हैं मैं तो जन्म जन्मांतर की डोहागिन हूँ, पापिन हूँ,मेरी रक्षा करो। रहम करो। कोई सच बोलते हैं,कोई तो झूठ भी बोलते हैं। यहां भी ऐसे ही है। बाबा हमेशा कहते हैं अपनी जीवन कहानी बाबा को लिखकर दो। कोई तो बिल्कुल सच लिखते हैं। कोई तो छुपाते भी हैं। लज्जा आती है। यह तो जानते हो बुरा काम करने पर उसका फल भी बुरा मिलेगा। वो तो है अल्पकाल की बात। यह तो बहुत कालों की बात है ना। बुरा काम करेंगे तो सजायें भी खावेंगे। स्वर्ग में भी बहुत पिछाड़ी में आवेंगे। अभी सारा मालूम पड़ जाता है कौन2 पुरुषोत्तम बन रहे हैं। वो है ही पुरुषोत्तम दैवी राज्य। उत्तम ते उत्तम पुरुषोत्तम बनते हैं ना। और किसी जगह ऐसे कोई की महिमा नहीं करेंगे। मनुष्य तो देवताओं के गुण भी नहीं जानते। भल महिमा गाते हैं ;परंतु तोते की तरह। इसलिए बाबा भी कहते हैं भक्तों को पकड़ो। कहते हैं (हम) नीच,पापी,कपटी हैं। बोलो क्या तुम जब शांतिधाम में थे तो क्या तुम वहां नीच,पापी,कपटी थे?वहां पर तो सब पवित्र रहती हैं। यहां पर अपवित्र बनी हैं ;क्योंकि तमोप्रधान दुनियां है। नई दुनियां में तो पवित्र ही रहते हैं। पुरानी दुनियां में अपवित्र बन जाते हैं। अपवित्र बनाने वाला है रावण। इस समय भारत खास और आम सारी दुनियां पर इस समय रावण का राज्य है। अंग्रेजी में शैतानी राज्य कहा जाता है। यथा राजा–रानी तथा

प्रजा। हाइयेस्ट टू लोयेस्ट। सब पतित हैं। पवित्र आत्मायें कहां से आ नहीं सकतीं। भल मनुष्य समझते हैं कि साधु–संत अपवित्र हैं ;परंतु शिवबाबा कहते हैं कि यह तो पहले2 परमात्मा से बेमुख करत हैं। अपने को तथा सारे भारत को जो भी इनकी शरण लेत हैं उनको पाताल भेज देते हैं। बाबा कहते हैं मैं तुमको पावन बनाकर जाता हूँ। फिर पतित कौन बनाते हैं?रावण। अब फिर तुम हमारी मत से पावन बन रहे हो। जानते हैं कि फिर आधा कल्प बाद हम रावण की मत पर पतित बनेंगे अर्थात् देह अभिमान में आकर विकारों के वशीभूत हो जावेंगे। उसको आसुरी रावण मत कहा जाता है। मनुष्यों की है आसुरी रावण की मत। तुम अभी रावण आदि को बिल्कुल नहीं मानते हो। वो तो दिन प्रतिदिन पतित ही बनते जाते हैं। भारत ही पावन था सो ही पतित है। फिर पावन बनना है। यह चक्र जरूर फिरना है। पावन बनाने लिए पतित–पावन बाप को आना पड़ता है। सृष्टि को चक्र जरूर लगाना ही है। यह फिरता रहता है। बाबा समझाते हैं इस समय देखो कितने ढेर मनुष्य हैं। कल कितने मनुष्य होंगे। लड़ाई लगेगी। मौत तो सामने ही खड़ा है। कल फिर इतने सब कहां जावेंगे। सबके शरीर और यह पुरानी दुनियां विनाश होती है। यह राज अभी तुम्हारी बुद्धि में है। पत्थरबुद्धि मनुष्यों को यह भी पता नहीं है। हू–ब–हू जैसे कि एकदम अनाड़ी है। वैसे ही यहां भी अनाड़ी हैं नम्बरवार पुरुषार्थअनुसार। हम किसके सामने बैठे हैं वो भी समझते नहीं हैं। कम से कम पद पाने वाले ड्रामा अनुसार कर ही क्या सकते हैं। तकदीर में नहीं है। अभी तो बच्चों को सर्विस करनी है। बाप को याद करना है। यह तो समझो आज हम संगमयुगी ब्राह्मण है। कल फिर क्या बनेंगे?पास्ट में हम शैतान रावण के धर्म के थे। अभी ईश्वरीय धर्म के हैं। जैसे बाप ज्ञान का सागर ,सुख का सागर है वैसा ही बनना है। बनाने वाला बाप मिला है ना। देवताओं की महिमा गाते हैं सर्वगुण सम्पन्न 16.....अभी तो इन गुणों वाला कोई है नहीं। अपने से सदैव पूछते रहो हम उंच पद पाने के कहां तक लायक बने हैं। संगम को अच्छी रीति याद करो हम संगमयुगी ब्राह्मण पुरुषोत्तम बनने वाले हैं। श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम है ना नई दुनियां का। हम भी अब शिवबाबा से विश्व के मालिक बनते हैं। बच्चे जानते हैं हम शिवबाबा के सम्मुख बैठे हैं। तो और ही जास्ती पढ़ना चाहिए। पढ़ना भी है,पढ़ाना नहीं है तो सिद्ध होता है कि पढ़ते नहीं हैं। बुद्धि में बैठता नहीं है। 5% भी नहीं बैठता। यह भी याद नहीं रहता कि हमस ंगमयुगी ब्राह्मण हैं। बुद्धि में बाप को याद करना है और चक्र फिराना है। समझानी तो बहुत सहज है। अपने को आत्मा समझकर और परमात्मा बाप को याद करना है। वो है सबसे बड़ा बाप। कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावें। तुम पूज्य पुरुषोत्तम थे फिर कनिष्ट सो पुजारी बने होंगे। यह किसको पता नहीं कि हम ही पूज्य सो पुजारी बनते हैं। हम सो पूज्य, हम सो पुजारी मंत्र है बहुत अच्छा। उन्होंने फिर आत्मा सो परमात्मा कह दिया है। जो कुछ भी बोलते हैं एकदम रांग। इसको कहा ही जाता है इररिलीजस, अनराइटियस, अनलॉफुल ,इम्प्योर। हम ही यह थे। फिर 84 का चक्र लगाकर अभी ऐसे बने हैं। फिर हम जाते हैं घर वापस। हम आज यहां पर हैं। कल फिर घर जावेंगे। हम बेहद के घर में जाते हैं। यह बेहद का नाटक है जो अभी रिपीट होता है। अभी हमको बाप और घर ,मुक्तिधाम को याद करना है। देह सहित देह के सभी धर्म भूल अपने को आत्मा समझो। अभी हम इस शरीर को छोड़ कर अपने घर जाते हैं। यह पक्का याद कर लो बुद्धि में। हम आत्मा हैं यह भी याद रहे और अपने घर भी याद रहे। बुद्धि से सारी दुनियां का सन्यास होगा। शरीर का भी सन्यास तो सबका सन्यास। वो हठयोगी कोई सारे सृष्टि का थोड़े ही करते हैं। उनका अधूरा सन्यास है। तुमको सारी दुनियां का त्याग करना है। अपने को देह समझते हैं तो गधे, उल्लू ,पाजी बन जाते हैं। फिर काम भी वैसे ही करते हैं। देह अभिमानी बनने से चोरी–चकारी ,झूठ, पाप कदम2 पर करते रहते हैं। दिन में 25/30 पाप करते हैं। झूठ बोलना

भी तो पाप है ना। आदत पड़ जाती है। आवाज से बोलने की भी आदत पड़ जाती है। फिर कहते हैं हमारा आवाज ही ऐसा है। अरे, तो वो कम करना सीखो ना। आवाज कम करने में कोई देरी नहीं लगती है। कुत्ते को पालते हैं तो अच्छा हो जाता है। बंदर कितने छित्ते होते हैं। मगर कोई साथ हिल जाते हैं तो डांस आदि करते रहते हैं। जनावर भी सुधर जाते हैं। जनावरों को सुधारने वाले हैं मनुष्य। मनुष्यों को सुधारने वाला भगवान है। बाप कहते हैं तुम भी जनावर मिसल हो। तो मुझे भी कच्छ अवतार ,मच्छ अवतार में कह देते हो। जैसी तुम्हारी एक्टिविटी है उससे भी बदतर मुझे कर दिया है। कितने नानसेंस हो। यह भी तुम जानते हो दुनियां नहीं जानती है पिछाड़ी में तुमको सब सा. होगा। कैसे2 सजायें खावेंगे। वो भी तुमको मालूम पड़ जावेगा। आधा कल्प भक्ति की है। अब बाप मिला है। बाप कहते हैं मेरी मत पर नहीं चलेंगे तो सजायें और ही बढ़ती जावेगी। इसलिए अब पाप आदि छोड़ो। अपना चार्ट रखो। फिर साथ2 धारणा भी चाहिए। किसको समझाने की प्रैक्टिस भी चाहिए। प्रदर्शनी के चित्रों पर खयालात बैठकर चलाओ कि कोई को हम कैसे समझावें। पहले2 बात ही यह उठाओ कि गीता का भगवान कौन?जबकि ज्ञान का सागर पतित–पावन तो परमात्मा है ना। यह बाप है सभी आत्माओं का। बाप का तो परिचय चाहिए ना। ऋषि–मुनि आदि कोई का भी ना बाप का ही परिचय है ना ही रचना की आदि,मध्य,अंत का ही परिचय है। इसलिए पहले2 तो यही उनको समझ सिखा लो। भगवान एक है दूसरा कोई हो ही नहीं सकता। जो अपने को शिवोअहम् अथवा आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा कहते है, वो हैं महान पतित,असुर। आसुरी राज्य तो है ना। सबसे जास्ती शैतान कौन है?जो अपने को ईश्वर कहलाते हैं। बाप बार2 समझाते हैं कि यहां जब आकर बैठते हो तो बाप की याद में रहो। बाप भगवान हमको पढ़ाते हैं। हम स्टुडेंट हैं। वो बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरू भी है। एक को याद करेंगे तो टीचर और गुरू दोनों की याद आ जावेगी। बुद्धि भटकनी नहीं चाहिए। सिर्फ शिव–शिव भी नहीं कहना है। शिव हमारा बाप भी है सुप्रीम टीचर भी है हमको साथ भी ले जावेगा। उस एक की ही कितनी महिमा है। उनको ही याद करना है। कोई कहते हैं इसने तो ब्र.कु. को जाकर गुरू बनाया है। तुम भी गुरू तो बनते हो ना। फिर भी तुमको बाप नहीं कहेंगे। टीचर, गुरू कहेंगे ,बाप नहीं। तीनों ही फिर उस एक बाप को ही कहा जाता है। वो सबसे बड़ा बाप है। यह अच्छी रीति समझाना है। प्रदर्शनी में समझाने की भी अक्ल चाहिए। ढंग है ;परंतु बोलते नहीं हैं। तो भी समझेंगे कि खिर नहीं है। अपने में हिम्मत नहीं समझते। बापदादा दोनों कम्बाइंड है। बड़ी2 प्रदर्शनी होती है जैसे जयपुर में। जयपुर का कनेक्शन बहुत है तो जो अच्छे2 बच्चे हैं उनको जाकर मुंह दिखाकर आना चाहिए। जैसे कुमारका है ,रमेश है। ऐसा कोई जरूरी काम है नहीं जो जा नहीं सकते। जैसे गंगा है ,अच्छा समझा सकती है। कुछ फेर–गेर करनी है ,क्या करना है तो अपना विचार,सागर,मंथन कर बाबा को बतावेंगे। अनुभव भी पाना है हमने क्या2 कमी देखी?गाइड्स पूरे नहीं देखे। सर्विसेबुल बच्चों को फिर देहअभिमान भी आ जाता है। आपस में लून–पानी हो जाते हैं। अंदर आवेगा इनके सामने जावेंगे फिर कुछ हो नहीं जावे। इससे तो ना जावें तो अच्छा है। इसको ही कहा जाता है देहअभिमान। इसमें बड़ी क्लीयर बुद्धि चाहिए। जावेंगे तो बाबा को पूरा समाचार देवेंगे कि अभी यह2 बनाना है। ऐसा2 चित्र होना चाहिए। बाबा बच्चों की राय को मानते तो हैं ना। चित्र भी तो बच्चे ही बनाते हैं ना। यह सीढ़ी भी तो बच्चे ने ही बनाई है। फिर विचार,सागर,मंथन हुआ वा कहीं देखा कि हम भी ऐसी बनावें। ड्रामाअनुसार ऐसी निकलनी थी। राय निकली फिर उसको इम्प्रूवमेंट में लाते गये। बाबा मना थोड़े ही करते हैं। आगे चलकर साधु–संत आदि को भी तुम बाण मारते रहेंगे। जावेंगे कहां?एक ही हट्टी है। सदगति सबकी इसी हट्टी से होगी। यह हट्टी ऐसी है जहां तुम सभी को प्योर होने का रास्ता बताते हो। फिर बने वा ना बने वो है उन पर। अच्छा, मीठे2 बच्चे से विदाई। ओम।